# भारत में आर्थिक विकास व रोजगार की गई संभावनाएं तथा बाह्य स्त्रोतिकरण बी.पी.ओ. व आई.टी. क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में

*डॉ. अंजना जैन **प्रो. विनीता वर्मा

विश्व का सबसे बडा प्रजातान्त्रिक राष्ट्र भारत आउटसोर्सिंग के क्षेत्र में विश्व के सर्वोच्च शिखर पर पॉव जमाकर अपनी गुणवत्ता कार्यक्षमता का परिचय दे रहा है। भारत आज पुरे विश्व के लिये आउटसोर्सिंग के मामले में पहला पंसदीदा देश है। तकनीकी दृष्टि से उत्कृष्ट होने के बावजूद हमने चीन को मात भी दे दी है।

भारतीय उद्योग पतियों ने उदारीकरण का लाभ उठाते हुए अपनी सुझबुझ, मेंहनत और लगन से संपूर्ण विश्व में अपनी सफलता के परचम को फैलाकर अर्थव्यवस्था के विकास की नई संभावनाओं के द्वारा खोल दिए है। इन्हीं नई संभावनाओं में से एक संभावना है – ब्राह्यस्त्रोतिकरण। Out sourcing के माध्यम से हम कम लागत पर वस्तुओं और सेवाओं को बाहरी स्त्रोतों से प्राप्त कर सकते है। अर्थात् किसी दुसरे देश के मेंन पॉवर का उपयोग कम लागत में कर, काम करवाना है। इसके पीछे कंपनियों का मुख्य उद्देश्य कम लागत में बेहतर सेवाएं ठेके पर लेना होता है। कोटलेकर के शब्दों में :– ''एक ग्लोबल कंपनी विश्व को एक बडे बाजार के रूप में देखती है ऐसी कंपनी राष्ट्रीय सीमाओं को न्युनतम महत्व देती है। तथा ऐसी सर्वोत्तम जगह से पुंजी सामग्री, उपकरण प्राप्त करती है तथा निर्माण एवं बाजार में माल बेचती है भारत में अन्य देशों के मुकाबले उपलब्ध श्रम की उच्चगुणवत्ता, कार्यक्षमता, अच्छा अंग्रेजी, ज्ञान संवाद के सलीके, आत्मविश्वास और सबसे महत्वपूर्ण कमलागत में उपलब्धता के चलते आउटसोर्सिंग के मामले में भारत विश्व में अविवादित पंसदीदा नेता बन गया है। और निकट भविष्य में भारत की विश्व में ज्ञान आधारित राजधानी बनने की संभावना है। पिछले कुछ वर्षो से अमेंरिका, जापान, सिंगापुर, कोरिया, हालैण्ड आदि देशों की कंपनियां भारत में बडे पैमाने पर आउटसोर्सिंग कर रही है। तथा अन्य देशों की भी तमाम मल्टीनेशनल कंपनियां भारत की तरफ रूख कर रही है इससे बडे पैमाने पर अनेक क्षेत्रों में रोजगार की संभावना भारत में जागी है जिसमें मुख्य क्षेत्र है बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (B.P.O.) नॉलेज प्रोसेस आउटसोर्सिंग (K.P.O.) इंजीनियरिंग प्रोसेस आउटसोर्सिंग (E.P.O.) और लॉ प्रोसेस आउटसोर्सिंग (L.P.O.) बी.पी.ओ. व आय.टी. में इस वर्ष रोजगार के अनेक अवसर सृजित हुए है। वर्ष 2001–02 में 42000 व्यक्तियों को वर्ष 2004–05 में 4,70,000 व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध हुआ तथा वर्ष 2008–09 में 11,00,000 से भी अधिक को रोजगार मिलना संभावित है। प्रस्तुत शोध आलेख के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि बाहयस्त्रोतिकरण के कारण रोजगार की क्या संभावना है? तथा अर्थ व्यवस्था व रोजगार पर इसका कितना अनुकूल प्रभाव पडा है ? और इसकी चुनौतियां क्या है ?

24 जनवरी सन् 2004 के अमेंरिका में आयोजित आउटसोर्सिंग सम्मेंलन के अनुसार भारतीय इसके द्वारा बहुत सारा जॉबवर्क ले रहे है और अपनी अर्थ व्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे है। इसी आउटसोर्सिंग के बाद अमेंरिकन अपनी अर्थ व्यवस्था में भारतीयों से 50 अरब डॉलर से भी अधिक का योगदान प्राप्त कर रहा है। अर्थात् अमेंरिका से भारत में सस्ता श्रम होने से आउटसोर्सिंग कार्य पांच गुना सस्ता पडता है। भारत में पूणे, हैदराबाद, बेंगलोर, बॉम्बे, चढीगढ़, दिल्ली आउटसोर्सिंग के प्रमुख केन्द्र बन गये है।

पुरे विश्व में जहां B.P.O. बाजार का विस्तार लगभग 9 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से बढ रहा है वही भारत में इसकी वृद्धि दर लगभग 54 प्रतिशत है। आउटसोर्सिंग वर्ष 2007–08 में निजी क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध करवाने में सर्वश्रेष्ठ साबित होगा B.P.O. व आई.टी. के अतिरिक्त अन्य क्षेत्र जैसे बुनियादी ढांचा, कपडा और ऑटो वाहन में 1 करोड 40 लाख नई नौकरियां तथा अन्य क्षेत्रों में 20 लाख नई नौकरियां मिलने की संभावना होगी।

भारत में सेवा क्षेत्र आउटसोर्सिंग व उपलब्धियां

**आउटसोर्सिंग के प्रभाव**

- बढते विश्व बाजार अवसरों ने घरेलू वेतन भुगतान को बडी मात्रा तक बचा दिया है।
- भारत का विदेशी मुद्रा भण्डार तेजी से बढ रहा है।
- भारत आर्थिक शक्ति का केन्द्र बिन्दु बन रहा है।
- तकनीकी मानव संसाधन की दृष्टि से भारत दुनिया का एक बडा प्रमुख केन्द्र है और आउटसोर्सिंग के द्वारा उसके मेंन पॉवर का प्रयोग भारत के लिये वरदान साबित हो रहा है।
- ''कम लागत पर अधिक काम'' की उपलब्धि ने विश्व स्तर पर भारत के युवाओं के लिये बडे पैमाने पर रोजगार के द्वारा खोल दिये है।
- विश्वस्तर पर उपभोक्ता को उचित दामों पर बेहतर सेवा उपलब्ध।
- सेवा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन का दौर।
- अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में भारत की हिस्सेदारी में वृद्धि।

*प्राध्यापक–अर्थशास्त्र शा.म.ल.बा.क.महा.वि. किला भवन, इन्दौर **शा.पी.जी.क.महा.वि. मोती तबेला, इन्दौर

Hkkjr esa lwpuk {ks= vkmVlkflZx o miyfC/k;k

| dz- | {ks= | 2005&06 esa fLFkfr | 2007&08 esa lHkkfor |
|---|---|---|---|
| 1. | बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (B.P.O.) | 6.3 अरब डालर | 8.5 अरब डॉलर |
| 2. | नॉलेज प्रोसेस आउटसोर्सिंग (K.P.O.) | 2 अरब डॉलर | 5 अरब डॉलर |
| 3. | नॉलेज प्रोसेस आउटसोर्सिंग (K.P.O.) कंपनियों की संख्या | 120 कंपनियां | 200 के लगभग |
| 4. | विभिन्न देशों की आई.टी. कंपनियों से भारत को काम मिलता है। | 500 से | 2000 कंपनियों के लग. |
| 5. | भारत का कुल आउटसोर्सिंग बिजनेस | 10 अरब डॉलर | 12 अरब डॉलर |
| 6. | आई.टी. व B.P.O. सेक्टर में काम करने वाले लोगों की संख्या | 06 लाख | 10 लाख |
| 7. | आई.टी. आउटसोर्सिंग बाजार से प्राप्त | 11.5 अरब डॉलर | 120 से 150 अरब डॉलर |
| 8. | सूचना तकनीकी आधारित B.P.O. | 410 अरब डॉलर | 1200 |

- अन्तर्राष्ट्रीय संबंधो को बढावा।

चुनौतियां :– आउटसोर्सिंग ने भारत के मानव संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग संभव बनाया है रोजगार के क्षेत्र में यह आशा की नयी किरण है। इससे और अधिक सेवा के अवसर उपलब्ध होंगे लेकिन इसने कई चुनौतियां को खडा कर दिया है।

- बाह्य संसाधन के रूप में भारतीय मस्तिष्क का विश्व बाजार में जाना एक अद्भुत घटना है। B.P.O., साटवेयर के क्षेत्र में भारत की पकड बढ रही है लेकिन इनका लाभ केवल महानगरों तक समिति है ग्रामीण क्षेत्र इसके लाभ से वंचित है।
- काम की लंबी अवधि ने तनाव व सामाजिक जीवन में व्यवधान, स्वास्थ्य व कार्यक्षमता पर विपरीत असर उत्पन्न किया है।
- असमान, आय वितरण ।
- सूचनामों के लिक होने या उनके दुरूपयोग ने भारतीय बाजार की विश्वनयिता पर सवाल खडे कर दिये है।
- भारत को विश्व बाजार में दोयम दर्जे के ठेके मिलते हैं
- भारत के महानगरीय क्षेत्र में कंपनियों के केन्द्रीयकरण ने क्षेत्रीय असतुंलन को बढावा दिया है।
- सामाजिक संबंधों के स्वरूप में पश्चिमी प्रभाव परिलक्षीत होने लगा है।
- उपभोक्तावादी संस्कृति का जन्म।
- भारत से आउटसोर्सिंग करवाने को लेकर न केवल अमेरिका, ब्रिटेन, युरोप अन्य देशों के श्रम संघो का खुलकर विरोध शुरू हो गया है वर्ष 2004 में अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव का मुख्य मुद्या आउटसोर्सिंग व वहां की बेरोजगारी रहा।

**निष्कर्ष :–** बाह्यस्त्रोतिकरण भारतीय युवा के स्वर्णीय भविष्य की बाट जोड रहा है। बशर्ते है हमें नहीं भुलना है।

सेवाओं की गुणवत्ता स्थिरता, निरंतरता, समयबद्धता व विश्वनियता बनाये रखना है।

अपने प्रतिस्पर्धीयों से कम लागत में अधिक काम उपलब्ध कराना तो वैश्विक प्रोद्योगिकी बाजार में भारतीय ज्ञान का शंखनाद जारी रहेगा। और भारत को पुनः विश्व की ज्ञान आधारित राजधानी बनने से कोई नहीं रोक सकेगा।

लेकिन इन सबसे मध्य हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि दौलत कमाने की इस अंधी दौड में हमारी भारतीय संस्कृति और हमारे दोर्धकालीन सामाजिक मूल्य कही इसकी भेट न चढ जाये। किराये की इस व्यवस्था में संबंधों की आत्मीयता अपना दम न तोड दे।

**संदर्भ सूची :–**

1. Economic Time July 2006
2. प्रतियोगिता दर्पण 2006
3. इक्नोमिक विक्ली अगस्त 2006
4. EPW 2007
5. नई दुनिया 2007 (31 July)